Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अमृतलाल नागर के उपन्यास खंजन नयन में कल्पना और ऐतिहासिकता का समन्वय

डॉ० राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
राजकीय महाविद्यालय, बी०बी० नगर, बुलन्दशहर

'खंजन नयन' भक्तिकाल के महाकवि 'सूरदास' की जीवनी पर आधारित उपन्यास है, सूरदास एक कवि होने के साथ–साथ ऐतिहासिक व्यक्ति भी हैं। अतः स्वभावतया ही इस उपन्यास में ऐतिहासिकता का समावेश हो गया है। नागर जी ने उपन्यास की भूमिका में स्वयं लिखा है– **"ऐतिहासिक उपन्यास को विशुद्ध इतिहास मान लेना ठीक नहों। उपन्यास ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, अनैतिक भले ही किसी भी विशेषण से भुक्त हो। वस्तुतः वह उपन्यास ही होता है, लेखक उसमें कल्पना की सृष्टि कर नये प्रसंगों की उद्भावना कर अपने भावों को अभिव्यक्ति देता है।''**

[1] ऐतिहासिक उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए डॉ० शशि भूषण सिंघल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान' में टिप्पणी करते हुए लिखा है– **''ऐतिहासिक उपन्यासकार अपनी बिम्बात्मक शैली तथा कल्पना प्रयोग की दृष्टि से इतिहासकार से भिन्न है, उसका कलाकार घटना के अंकन विवेचन से आगे बढ़कर चित्रण द्वारा उसे बिम्बात्मक रूप प्रदान करता है। बिम्ब की छाप पाठक के हृदय पर छोड़ना उसका उद्देश्य रहता है।''[2]**

इस संबंध में मधुरेश ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास का विकास' में पाश्चात्य आलोचक लेस्सली स्टीफन को उद्धरत करते हुए लिखा है– **''एतिहासिक उपन्यास के लिए असाधारण स्मरण शक्ति उर्वर कल्पना शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है। लेस्सली स्टीफन ऐतिहासिक उपन्यास को एक वर्ण शंकर रचना के रूप में परिभाषित करते हैं क्योंकि वह दो परस्पर विरोधी चीजों इतिहास और कल्पना के मेल से बनता है।''[3]** नागर जी ने भूमिका में लिखा है कि **''आरम्भ में इस प्रकार के स्पष्टीकरण की आवश्यकता इसलिए समझी कि 'मानस का हंस' उपन्यास पढ़कर गोस्वामी तुलसीदास के प्रति अन्ध धार्मिक श्रद्धा रखने वाले कुछ पाठकों को ऐसी ही शिकायतें हुई थीं। हो सकता है कि 'खंजन नयन' पढ़कर कुछ सूरान्धों को भी वैसी ही शिकायतें हों उनके लिए अपने सतही मन की औपचारिक सहानुभूति मात्र ही अर्पित कर सकता हूँ। सहृदय, सुविद् पाठकों को सूरबाबा के प्रति मेरी निश्छल श्रद्धा के दर्शन अवश्य मिलेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।''[4]**

तुलसी के समान सूर के जीवनवृत की ऐतिहासिक प्रामाणिकता भी अधर में लटकी हुई है। दोनों ही महाकवियों की जन्मभूमियाँ पंड़ितों की अदालत में अब तक कोई निश्चित फैसला नहीं पा सकीं हैं अतः स्वभावतया ही इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में स्थान प्रदान किया जा सकता है। इस संबंध में डॉ० शशि भूषण का मत भी समीचीन– **''इतिहासकार प्रमाणिक तथ्यों के संग्रह तथा विवेचन व्याया तक सीमित रहता है, किन्तु ऐतिहासिक उपन्यसाकार तथ्यों के मध्य रिक्तांशों को भरने उनमें कार्य कारण का संबंध स्थापित करने तथा उन्हें मानव चरित्र सापेक्ष बनाने के लिए जीवन**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सुलभ कल्पना का आश्रय लेने को स्वतंत्र है।''[5] सूर की किशोरावस्था तक का समय दिल्ली के बादशाह सि्कन्दर के राज में व्यतीत हुआ, जिसकी हिन्दू धर्म विरोधी नीतियों, मन्दिरों को तुड़वाने, तीर्थस्थलों की यात्रा तथा पवित्र नदियों में स्नान बन्द करा देने आदि तथ्यों का भी उपन्यास में स्थान–स्थान पर उल्लेख किया गया है, जिससे इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यासों की श्रेणी में स्थान प्रदान करना और सुगम हो जाता है।

उपन्यास के आरम्भ में ही तत्कालीन युग की स्थिति का चित्रण किया है– यथा **''धर्म क नाम पर बदला लेने के लिए स्त्री और धन की लूट कुछ लोगों का पुण्य कार्य बन गयी थी। कुछ बरसों पहले सिकन्दर सुल्तान ने जब गद्दी पर बैठने के बाद महावन से आकर मथुरा में पहली मारकाट मचाई थी, तब जो परिवार जबरन मुसलमान बनाए गए थे, वे ही इस समय शहर में सबसे अधिक आतंककारी हैं। मथुरा के सैकड़ों घरों में लाशें पड़ी हैं अनेक मोहल्ले धू–धू कर जल रहे हैं काजियों–मुल्लाओं की जय–जयकार बोलकर सुल्तान और दीन की हुचिकयाँ ले–लेकर नए मुसलमान गुन्ड़े हिन्दू बस्तियाँ लूट रहें हैं।''**[6] अतः तत्कालीन युग की यथास्थिति का चित्रण किया गया है। सूर कालीन खान–पान, वातावरण और रीति–रिवाजों के वर्णन में तथा तत्कालीन धार्मिक सांस्कृतिक परिवेश का भी चित्रण करने के फलस्वरूप इसकी ऐतिहासिकता और भी अधिक पुष्ट हो जाती है। हाँ इस सन्दर्भ में नागर जी के निम्नांकित अभिमत की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए– **''पश्चिम के कुछ साहित्य पंड़ित ऐतिहासिक उपन्यासों के नाम पर नाक–भौं सिकोड़ते हैं। उनका यह मत है कि इतिहास अच्छे उपन्यास के लिए घातक सिद्ध होता है। इसी प्रकार कुछ इतिहासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यासों को कोसा है। उनकी दृष्टि में उपन्यास इतिहास का शत्रु है इन दोनों ही परस्पर विरोधी बातों में सच्चाई का अंश अवश्य है, मैं भी यह मानता हूँ कि ऐतिहासिक उपन्यास को विशुद्ध इतिहास मान लेना ठीक नहीं है उपन्यास ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक–अनैतिक भले ही किसी भी विशेषण से युक्त हो वस्तुतः वह उपन्यास ही है केवल उपन्यास, यह दूसरी बात है कि ऐतिहासिक काल विशेष के चरित्रों का चित्रण करते समय लेखक उस काल की प्रमुख घटनाओं और नैतिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संस्कारों को भी चरित्रों के मनोनिर्माण में आवश्यक मानकर उन्हें समाहित कर लेता है।''**[7]

उपन्यास की ऐतिहासिकता पर इसी परिप्रेक्ष्य में विचार करना चाहिए कि यह वास्तव में सूरदास की जीवनी को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है, (जिसमें अनेक काल्पनिक घटनाओं का समावेश मिलना स्वाभाविक है) किन्तु यह सत्य है कि नागर जी ने सूरदासकालीन घटनाओं और नैतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक, धार्मिक संस्कारों का भी चरित्र निर्माण में सहारा लिया है।

तत्कालीन युग का एक चित्र– **''बहुत से घाटों पर साधु और गोमाता के कटे सिर टंगे हैं। कहीं जादू–टोने का भय उत्पन्न करके कि यहाँ आओगे तो चोटी कट जाएगी घाट बन्द कर दिए हैं। स्नान, पूजा, यज्ञ, कीर्तन सब–कुछ लोप हो चुका है।''**[8]

ये प्रसंग तत्कालीन युग की लोगों की मानसिक अवस्था का चित्रण करते हैं। अतः उपन्यास में ऐसे स्थलों पर ऐतिहासिकता का समावेश स्वयं हो गया है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तत्कालीन युग में लोगों के अन्दर अन्धविश्वास, जादू–टोने, ज्योतिष का चमत्कार आदि का बोलबाला था। एक बानगी देखिए–

"किसी यवन तांत्रिक ने वहाँ ऐसा यन्त्र टांग रखा था कि उसके नीचे होकर निकलने वाले प्रत्येक हिन्दू की शिखा कट जाती थी और उसे बलात दूसरे धर्म का मान लिया जाता था। किन्तु श्री वल्लभभट्ट के आत्मबल ने उस यन्त्र का निस्तेज कर दिया।"[9]

तत्कालीन युग में लोगों के अन्दर डर इस तरह से समाया हुआ था कि बस कहते नहीं बनता–

"मेहंदी को रंग खून में मिलाय दियौ है सारेन ने।

हमारी हंसी–खुशी लूट लई राक्छसन ने, बूढ़े गनेशी की आँखें छलछला उठी।"[10]

इन प्रसंगों से स्पष्ट है कि सिकन्दर सुल्तान के राज में लोगों का इस प्रकार दमन हो रहा था कि वे अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकते थे। अतः हम कह सकते हैं कि उपन्यास में स्थल–स्थल पर ऐतिहासिक घटनाओं का, लोगों की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया हैं। एक मथुरावासी नागरिक कहता है–

"सच्ची कहो, जीना मुहाल हो गया है सिकन्दर सुल्तान के राज में। बाल नई बनवा सको हो– ससुरे द्रौपदी के चीर से बढ़े चले जाय हैं। सबके म्हौड़ान पे पूतना के से थन लटक रहे होंगे। जमना जी में न्हायें नई, मुंडन जनेऊ ब्या सभी में बाधा।"[11]

अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का समावेश होने पर भी नागर जी के उपन्यास को इस अर्थ में ऐतिहासिक उपन्यास स्वीकार करने पर आपत्ति है कि इसमें वर्णित प्रत्येक घटना को ऐतिहासिकता सत्य की कसौटी पर कसा जाए और अधिकांश बातों को इतिहास विरूद्ध करके कहा जाए कि यह एक असफल ऐतिहासिक उपन्यास है। उपन्यास में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जिन पर सूरभक्त उँगली उठा सकते हैं, किन्तु फिर भी उपन्यास में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जो कि उपन्यास को ऐतिहासिक कहा जा सकता, क्योंकि नागर जी ने इसमें कल्पना का भी समावेश किया है, किन्तु उपन्यास में स्थल–स्थल पर ऐतिहासिकता अवश्य है।

सूरदास और कंतो का लम्बा प्रेम प्रसंग, जिसके संबंध में कहा जा सकता है कि सुरदास की कंतो नामक किसी प्रेयसी का उल्लेख नहीं मिलता। हो सकता है कि सूर के जीवन में कंतो जैसी कोई नारी न आई हो अथवा यह भी संभावना है कि वे अपने व्यक्तिगत जीवन में उससे भी अधिक गिरे हुए हों जैसे कि इस उपन्यास में चित्रित किए गए हैं। हाँ, उपन्यासकार सम्भावनाओं को महत्व देता है और इस सम्भावना से निषेध नहीं किया जा सकता कि सूर के जोवन में कोई ना कोई नारी आयी अवश्य होगी– उसका नाम कुछ भी हो सकता है। विल्वमंगल के सूरदास की वह घटता तो प्रसिद्ध है कि किस प्रकार किसी विवाहित नारी के प्रति अपनी घोर कामाशक्ति के कारण सूरदास ने अपनी आँखें फोड़ ली थीं। इस घटना के संबंध में उपन्यासकार की यह टिप्पणी अवलोकनीय है– **"इस उपन्यास में आई हुई एक पात्र कंतो मल्लाहिन के संबंध में भी कुछ सफाई देना आवश्यक प्रतीत होता है। मथुरा के युवा विद्वान विष्णु चतुर्वेदी ने मुझे बतलाया था कि एक वार्ता के अनुसार कि युवा सूरदास किसी मल्लाहिन के इश्किया चक्कर**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

में फँसकर एक बार बुरी तरह मारे–पीटे गए थे। उक्त वार्ता मुझे पढ़ने को न मिल सकी इसलिए वह इश्के मल्लाहिन भले ही सच हो या ना हो परन्तु इस उपन्यास को कंतो मल्लाहिन युवा सूर की सार्थक प्रेमिका है।''[12]

यदि यह घटना वास्तव में घटित हुई हो तो कहा जा सकता है कि कंतो और सूरस्वामी की पिटाई को एक षड्यन्त्र का परिणाम दिखाकर उपन्यासकार ने अपने चरित्र–नायक के चरित्र को कलंकित होने से बचा लिया है।

उपन्यास के राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश का समावेश करने से ऐतिहासिक उपन्यासों की ऐतिहासिकता की विशेषता पुष्ट होती है, जिनका उपन्यास में अपेक्षित मात्रा में निर्वाह किया गया है।

राजनैतिक वातावरण– उपन्यास का आरम्भ ही सिकन्दर सुल्तान के राज्य में हिन्दुओं और हिन्दू–धर्म की दयनीय दशा के वर्णन से किया गया है– **''सुल्तान के राज में मारकाट के काजे कभी कोउ बात होवे है भला त्यौहार का दिना हमारी माँ–बहन के माथे का सिन्दूर आग की लपटों सौ उठ रयो है चौराये–चौराय पै।''**[13]

धार्मिक–साम्प्रदायिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का चित्रण– निम्नांकित उदाहरण से सन्दर्भगत तीनों ही प्रकार की स्थितियों का उद्घाटन हो जाता है– **''सावनी तीज का दिन। कुँआरियों–सुहागिनों का त्यौहार पिछले आठ–नौ साल से चले आ रहे प्रलय काल में बिन सुहागवंतियों की ससुरालें मथुरा के आस–पास के गाँवों और कस्बों में हैं, वे तो तीज के दिन अपने मैके नहीं आ पाती हैं, पर शहर के भीतर आस–पास के मौहल्लों में या शहर से लगे गाँवों में जिनके मैके ससुराल हैं उनके दिलों में तीज का उल्लास पत्थर पर हरियाली सा उमग ही पड़ता है। मृत्यु की भयानकता भी जीवन के सांस्कृतिक उत्सव को जड़ नहीं बना सकी। हाथों में मेहंदियाँ रचीं, गुलगुले पके, झूले पड़े, कजरी मल्हारें गाई जाने लगीं।''**[14] उपर्युक्त उदाहरण से तत्कालीन युग की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साम्प्रदायिक स्थितियों का चित्रण किया गया है, जो कि ऐतिहासिक है।

इसी मल्हार पर घमासान मच गयी– **''बौहरे खुन्नामल के घर घुसकर उसके कर्जदार पठान और उसके साथियों ने खूनी तीज मना डाली। न इज्जत बची न लक्ष्मी। गाँव के लोग सामना करने आए तो मारकाट के शोर से पड़ोसी गाँव की आग शहर में फैल गई। धर्म के नाम पर बदला लेने के लिए स्त्री और धन की लूट कुछ लोगों के लिए पुण्य कार्य बन गई। कुछ बरसों पले जब सिकन्दर ने गद्दी पर बैठने के बाद महावन से आकर मथुरा में पहली बार मार–काट मचाई थी, तब जो परिवार जबरन मुसलमान बनाए गए थ वे ही इस समय शहर में सबसे अधिक आतंककारी है। मथुरा के सैकड़ों घरों में लाशें पड़ी हैं, अनेक घर धू–धू कर जल रहे है।''**[15] कहना न होगा कि यह वर्णन ऐतिहासिक साक्ष्यों की दृष्टि से भी सत्य ही है।

उक्त तथ्यों के अतिरिक्त उपन्यास में अनेकानेक अन्य ऐतिहासिक तथ्यों का भी समावेश है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जैसे– मीराबाई और रूप गोस्वामी की भेंट
सूरदास और मीरा की भेंट
सूरदास और तुलसीदास की भेंट

महाप्रभु बल्लभाचार्य और उनके पुत्रों संबंधी विवरण, महाराजा बीरबल और टोडरमल, सम्राट अकबर आदि भी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं।

गोस्वामी और सूर की भेंट का एक चित्र– **''बाद में गोसाई जी ने हंसकर कहा, सूरदास जी इस आठ वर्ष के बूढ़े बैल को खूब नाथा। अष्ठछाप के अन्य सखाओं ने सुना तो खूब आनन्द लिया।''[16] ''इस भूलोक में ब्रजधाम में एक रात आपका रास और देख लूँ गुसाई, सुनकर गोस्वामी जी को धक्का मिला।''[17]**

अष्टसखाओं का एक चित्र देखिए– **''मंगला के दर्शन हुए। बाबा सूर ने सदा की भांति ही कीर्तन किया। फिर सूरदास जी के एक सौ पाँचवे जन्मदिन का उत्सव मनाया गया। कुंभनदास जी के पुत्र चर्तुभुजदास, परमानन्द दास और नन्ददास ने अपनी अनेक रचनाएँ सुनाई।''[18]**

संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'खंजन नयन' नामक उपन्यास में स्थल–स्थल पर ऐतिहासिकता के दर्शन होते हैं। इन उपन्यास के अन्तर्गत सूर के जीवनकालीन, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियों का यथातथ्य वर्णन किया गया है, किन्तु सूरदास के जीवन की सभी घटनाओं को ऐतिहासिकता सत्यता की कसौटी पर परखना इस दृष्टि से अनउपयुक्त ही है कि यह उपन्यास कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं है।

'खंजन नयन' उपन्यास में ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हो जाने के बाद भी कल्पना के दर्शन होते हैं। सूरदास चाहे ऐतिहासिक पात्र हो, किन्तु उनकी जन्मांधता को लेकर विद्वानों में आज तक कोई सहमति न हो सकी है, इन सभी समस्याओं का निवारण करने के लिए नागर जी ने ऐतिहासिकता के साथ कल्पना का अद्भुत मिश्रण किया है और उपन्यास को एक सुसंगठित, कौतूहलवर्धक, रोचक रूप में प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है।

'खंजन नयन' में सूरदास के बारे में कुछ ऐतिहासिक ग्रंथों को आधार बनाकर लेखक ने कथावस्तु में कल्पना का समाहार कर प्रासंगिक कथाओं के माध्यम से क्लेवर को गति दी है।

उपन्यास के आरम्भ में ही नागर जी ने सूर का कृष्ण के प्रति जो भक्ति–भाव, श्रृद्धा और प्रेम दिखाया उसमें कल्पना का मिश्रण कर एक स्वाभाविकता आ गई है–

''माँ ने ही श्याम को सूरज का सखा बनाया था। तब पाँच बरस की उम्र थी, तब तक सीही आ चुका था। सूरज खेलने की हठ करके बाहर के बच्चों से पिटकर आया था। हर तरफ से तिरस्कृत बालक का बिलखना देखकर माँ ने कलेजे से चिपटा लिया, फिर आप नहा और बेटे को नहलाकर मन्दिर में ले गयी थी। माँ ने इष्ट देव की मूर्ति पर हाथ फिरवाया था। टाँग पर टाँग रखकर खड़े हुए कान्हा को हाथ में उनकी जगमोहर वंशी, जिसका दूसरा सिरा राधेरानी उनके

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अधरों पर थामे थी। माँ ने कहा था कि यही तुम्हारे सच्चे सखा हैं। एक मन कृष्ण जी का एक तुम्हारा। ठाकुरद्वारे में बैठकर आनन्द से कृष्ण जी से बातें किया करो।''[19]

ऐसे प्रसंग का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलता, किन्तु नागर जी ने कल्पना का अद्भुत मिश्रण कर उपन्यास को रोचक बनाया है। श्रीकृष्ण से सूर का प्रेम, भक्ति, श्रृद्धा, श्रीकृष्ण से वार्तालाप मन ही मन कृष्ण को उलाहना देना, चुनौती देना आदि प्रसंगों के कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलते, ये सभी प्रसंग नागर जी की कल्पना के अद्भुत उदाहरण हैं–

''एक दिन बोलेगा, वही सच्चा सखा है, और फिर कृष्ण मन बोलने लगा। सूरज को लगा उसके भीतर उसी की एक आवाज दूसरी होकर बोलने लगी है, उसकी वंशी बजने लगी है। सूरज मन उन्हीं धुनों को गुनगुनाने लगा, पद रचना करने लगा।''[20]

एक अन्य घटना नागराज और सूर की मैत्री भी काल्पनिक है जो नागर जी की कल्पना शक्ति को प्रकट करती है–

''बाई बगल के आस–पास कुछ सरसराहट हुई। दोनों बांहें तकिया बनी हुई थीं। उन्हें मुक्त करने की इच्छा मन में तनिक सरसराई ही थी कि छाती के पास पराई सांस पराये रोयों को छुवन लगने लगी। धीरे–धीरे नाग की देह बगल में सट गई। फन सीधे छाती के ऊपर। सूरज की छाती की धड़कन श्याम नाम के साथ बन्द। लेकिन सूरज की चेतना चौकन्नी है।''[21] नागर जी ने सूर की नागराज की दोस्ती के प्रसंग को काफी लम्बा खींचा है, सूर के द्वारा साँप की केंचुली उतारना, साँप से खेलना आदि कल्पना है।

इस उपन्यास में आई एक पात्र कंतो मल्लाहिन को एक त्यागमयी, सच्ची, सूर को सात्विक प्रेम करने वाली, अपना सब–कुछ मानने वाली नारी के रूप में चित्रित कर नागर जी ने अपने नारी संबंधी विचारों को प्रस्तुत कर अपनी कल्पना शक्ति का परिचय दिया है। नागर जी ने भूमिका में लिखा कि **''मथुरा के युवा विद्वान विष्णु चतुर्वेदी ने मुझे बताया कि सूरदास किसी मल्लाहिन के इश्किया चक्कर में फंसकर एक बार बुरी–तरह मारे–पीटे गए थे। उक्त वार्ता मुझे पढ़ने को न मिल सकी इसलिए वह इश्के मल्लाहिन भले ही सच हो या ना हो, परन्तु इस उपन्यास की कंतो मल्लाहिन सूर की सार्थक प्रेमिका है।''**[22]

उपन्यास के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ कंतो का भी विकास होता जाता है। कंतो वही कंतो जो उपन्यास के आरम्भ में कामतृष्णा से पीड़ित है बाद में सूर के लिए मौत को पाकर सूर की सच्ची प्रेमिका होने का फर्ज निभाती है।

उपन्यास के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ सूर कामग्नि से पीड़ित होते हैं, किन्तु कंतो उनके सत्व को आँच नहीं आने देती। **''ऐकान्त में कंतो और सूरज के शरीर फिर टकरा गए सूरज ने अपने आलिंगन में बाँधना चाहा। कन्तों का मन भी कमजोर पड़ रहा था, परन्तु मुख पर ना–ना थी। सूरज की आकांक्षाएँ उस ना को अपनी हाँ से दबा देने के लिए उतावली थीं। खपरैल की छत पर**

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 6.886|
Vol. 14 Issue 10, October 2019
Available online at: https://livejimrjournal.in/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बन्दरों की चीं–चीं खों–खों भरी भागम–भाग में एक पुरानी ईंट का टुकड़ा टूटकर नीचे गिरा, बढ़ते मदन वेग पर मानो गाज गिरी खों–खों यंद्री का लड़बड़ा परे हटो, हनुमान जी देख रहे हैं कहकर कंतो छिटककर दूर जा खड़ी हुई।''[23]

इस प्रकार पूरे उपन्यास में नागर जी ने अपनी कल्पना के सतरंगी पंखों पर सवार होकर उपन्यास को एक अद्‌भुत रोचकता प्रदान की।

सूर के परिवार का भाईयों का, सूर से ईर्ष्या करना, सूर के द्वारा ज्योतिष विद्या के माध्यम से भविष्यवाणी करना आदि तत्कालीन समय में ज्योतिष विद्या का बाहुल्य था, किन्तु नागर जी ने ज्योतिष विद्या के द्वारा सूर के मुख से जो भविष्यवाणियाँ करायी हैं, उनमें भी कल्पना का मिश्रण है।

सूर के अन्य प्रेम प्रसंगों में अनारों, सुनैना दासियों आदि का चित्रण भी लेखक की कल्पना शक्ति की सृष्टि है। नूरे खाँ, कादिर, खुदाबख्स, सेठ गयादीन मुल्लर, वाजपेयी सुद्‌दन पंड़ित आदि पात्रों को अपनी कल्पनाशक्ति के बल पर खड़ा कर अन्य प्रासंगिक कथाओं को रचा है, जो उपन्यास की आधिकारिक कथा को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है।

सूर के द्वारा कोल्हू को खींचना, नूरे खाँ के द्वारा कंतो की हत्या आदि का वर्णन भी लेखक की कल्पना शक्ति का परिणाम है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नागर जी 'खंजन नयन' में अपनी कल्पना का समावेश कर कुछ ऐतिहासिक तथ्यों के बल पर एक नूतन सृष्टि की है और सूरदास जी को एक गौरवमयी पद पर प्रतिष्ठित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमृतलाल नागर– 'खंजन नयन', पृ०सं० 5
2. डॉ० शशिभूषण सिंघल, हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान, पृ०सं० 89
3. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, पृ०सं० 26
4. अमृतलाल नागर– 'खंजन नयन', पृ०सं० 5
5. डॉ० शशिभूषण सिंघल, हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान, पृ०सं० 89
6. अमृतलाल नागर– 'खंजन नयन', पृ०सं० 10
7. वही, पृ०सं० 5
8. वही, पृ०सं० 10
9. वही, पृ०सं० 10
10. वही, पृ०सं० 11
11. वही, पृ०सं० 12
12. वही, पृ०सं० 1

[13]. वही, पृ०सं० 7
[14]. वही, पृ०सं० 17
[15]. वही, पृ०सं० 42
[16]. वही, पृ०सं० 230
[17]. वही, पृ०सं० 231
[18]. वही, पृ०सं० 232
[19]. वही, पृ०सं० 18
[20]. वही, पृ०सं० 18
[21]. वही, पृ०सं० 25
[22]. वही, पृ०सं० 6
[23]. वही, पृ०सं० 120